फिरोज तुगलक और दास प्रथाः एक आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ0 मन्जू देवी
सहायक प्रोफेसर, (इतिहास विभाग)
सी.एम.के. नैशनल पी.जी. महाविद्यालय, सिरसा
ईमेलः dr.md158@gmail.com

सारांश

तुगलक वंश की स्थापना 1320 ई० में ग्यासुद्दीन तुगलक के द्वारा की गई थी। फिरोज तुगलक इस वंश के तीसरे सुल्तान थे जो 1351 ई० में सिंहासनारूढ़ हुए। उनके पिता का नाम मलिक रजब था तथा माता नैला अबोहर (पंजाब) के भट्टी राजपूत राय राजमल की पुत्री थी।[1] फिरोज तुगलक की दसों के संकलन में बहुत रुचि थी और उनके समय में दिल्ली सल्तनत में दास प्रथा अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई। फिरोज तुगलक ने दासों को जितनी सुविधाएं एवं अधिकार प्रदान किए, उससे पूर्व किसी भी शासक ने प्रदान नहीं किए थे। अफीफ के अनुसार उनके शासनकाल में दासों की संख्या 1,80,000 थी।[2]

मुख्य शब्द

अफीफ, इक्ता, मुक्ति, दीवान–ए–बंदगानए दीवान–ए–वजारत, अर्ज–ए–बंदगान, कुरान, अर्ज–ए–ममालिक, खासदार, शमादार, शिकारदार, पर्दादार, परगनादार।

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 31-01-26
Approved: 28-02-26

डॉ0 मन्जू देवी

फिरोज तुगलक और दास प्रथाः एक आलोचनात्मक अध्ययन

RJPP Oct.25-Mar.26,
Vol. XXIV, No. I,
Article No. 22
Pg. 202-206

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-mar-2026-vol-xxiv-no1--270

https://doi.org/10.31995/rjpp.2026.v24i01.022

प्रस्तावना

अफीफ के अनुसार फिरोज शाह तुगलक के समय में यह प्रथा थी कि प्रतिवर्ष जब इक्ताओं के मुक्ति सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत होते थे तो वे अपने सामर्थ्य के अनुसार उपहार लाते थे। इन उपहारों में अरबी घोड़े, सोने चाँदी के बर्तन, चौपाये, अस्त्र–शस्त्र तथा दास प्रमुख थे। इसके अतिरिक्त सुल्तान ने मुक्तियों को यह आदेश दिया कि वह जिस स्थान पर विजय प्राप्त करें, वहां से अच्छे–अच्छे दास पकड़ कर दरबार की सेवा में प्रस्तुत करें। जो मुक्ति सुल्तान को अधिक दास उपहार में प्रस्तुत करता था उस पर सुल्तान अधिक अनुकंपा प्रदर्शित करता था।[3] इस प्रकार जब इक्तादारों ने यह महसूस किया कि सुल्तान की दासों को एकत्रित करने में इतनी अभिरुचि है तो उन्होंने भी दासों को भेंट करना अपना कर्तव्य बना लिया। जिसके परिणामस्वरुप अत्यधिक संख्या में एकत्रित हो गए।

जब दासों की संख्या अत्यधिक हो गई तो फिरोज तुगलक ने उनकी सुविधा के लिए एक अलग से विभाग **दीवान–ए–बंदगान** स्थापित करवाया। इस विभाग का **दीवान–ए–वजारत** से कोई संबंध नहीं था। इसके अंतर्गत **अर्ज–ए–बंदगान** दासों की भर्ती व अन्य कार्य दासों पर होने वाली धनराशि की जाँच करता था। दासों के व्यय के लिए पृथक खजाना होता था।[4] इसके अतिरिक्त फिरोज तुगलक ने अपने दासों की जीविका की भी उचित व्यवस्था की। उसने 1,80,000 दासों में से 40,000 को अपने नीजि सेवा के लिए नियुक्त किया। कई हजार दासों को अपना अंगरक्षक नियुक्त किया। कुछ दासों को मुल्तान, दीपालपुर, हिसार, फिरोजा, समाना, गुजरात तथा अन्य स्थानों पर भेज दिया तथा वहीं उनकी जीविका की व्यवस्था कर दी। कुछ स्थानों पर उन्हें सेना में रखा गया और उन्हें अनुदान के रूप में ग्राम दे दिए गए। अन्य दास जो नगर में रहते थे, उनके लिए भी फिरोज ने उचित वेतन की व्यवस्था की जो 10 टके से 100 टके तक होता था।[5]

इसके अतिरिक्त फिरोज तुगलक ने दासों को **बौद्धिक** और आध्यात्मिक उन्नति के अवसर भी प्रदान किए। जिन दासों की पढ़ने में रुचि थी उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था की गई। अफीफ के अनुसार कुछ दास **कुरान** पढ़ते और उसे कंठस्थ करते थे। कुछ धार्मिक शिक्षाएं लिखने और कुछ सुल्तान की आज्ञा लेकर हज करने चले जाते थे।[6] इसके अलावा दासों को शिल्प विज्ञान की भी शिक्षा दी जाती थी। उनको शिल्पकारों के निर्देशन में रखा जाता था जो उन्हें शिल्प और विभिन्न प्रकार की कारीगरी में प्रशिक्षित करते थे। इससे 12,000 दास विभिन्न शिल्प कलाओं में दक्ष हो गए।[7] केंद्र के अतिरिक्त प्रान्तों में मालिकों तथा अमीरों को यह आदेश दिया जाता था कि वह दासों को विभिन्न कलाओं में प्रशिक्षित करें। अफीफ ने बताया है कि जब मुक्ति दास को प्रस्तुत करते थे, तो कुछ दास सुल्तान के आदेशानुसार अमीरों तथा मालिकों को इसलिए सौंप दिए जाते थे कि वह उन्हें शिष्टाचार सिखाएं। प्रति वर्ष उन्हें सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता था तथा उनके कार्य कुशलता में कौशल के बारे में बताया जाता था। जिन अमीरों के निर्देशन में दास अधिक योग्यता प्राप्त करते थे उन पर सुल्तान की बहुत अनुकंपा होती थी।[8] परिणामस्वरुप मलिकों और अमीरों में दासों के प्रशिक्षण के संबंध में प्रतिस्पर्धा होने लगी तथा उनमें से प्रत्येक दासों को अधिक योग्य बनाने का प्रयत्न करता था।

फिरोज शाह ने अपने शासनकाल में दासों को बड़े–बड़े राजनीतिक और प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया। खाने जहाँ मकबूल **दीवान–ए–वजारत** के पद पर नियुक्त था। बरनी ने बताया है

कि जितनी कृपा सुल्तान अपने दास खानेजहाँ के प्रति प्रदर्शित करता है उतनी कृपा राजधानी दिल्ली में किसी भी सुल्तान ने अपने समकालीन वजीर के प्रति प्रदर्शित नहीं की होगी।[9] फिरोज शाह का एक और अन्य दास आजम तातार खाँ बहादुर था। वह खान की श्रेणी में शामिल था। एमादुलमुल्क बश्शीर सुल्तानी **अर्ज–ए–ममालिक** के पद पर नियुक्त था। मलिक मुस्तौफी इफ्तेखारूलमुल्क गुजरात का नायब था और वह कई वर्षों तक इस प्रदेश का नायब रहा।[10] दासों के इन पदों से स्पष्ट है कि फिरोजशाह ने राज्य के प्रतिष्ठ एवं उच्च पदों पर भी उन्हें नियुक्त किया। इनमें जमादारखाना के अधिकारी मलिक रिबण बहराम तथा अलमखना, पायगाह, रिकाबखाना मलक मोहम्मद हाजी के अध ीन थे।[11] राज्य में इस प्रकार के 36 करखाने थे। अफीफ के अनुसार इनमें दासों का बोलबाला था। समस्त शाही कारखाने पर जैसे– आबदार, शराबदार, जामदार, इत्रदार, तश्तदार, चत्रदार, शमादार, पर्दादार, सिलहदार, शिकारदार, यूज़बान, पीबाबन, खासदार, संगतराश इत्यादि तथा महल के भीतर एवं बाहर, अलमखाना, घड़ियालखाना, दीवान–ए–अर्ज, दीवान–ए–विजारत, मुक्ती, परगनादार आदि सभी पदों पर दासों की नियुक्ति हुई।[12] सेना में भी वे काफी संख्या में नियुक्त किए जाते थे। उसकी सेना में दास वीर सैनिक योद्धा होते थे। इस संदर्भ में अफीफ ने मलिक कुबुल जो तोराबंद (रत्नजड़ित पगड़ी बांधने वाला) के उपनाम से जाना जाता था, की वीरता का उल्लेख किया है।[13]

फिरोज तुगलक का व्यवहार अपने दोस्तों के प्रति बहुत उदार था। वह उनके साथ एक बेटे जैसा व्यवहार करता था। उसने सेना में जो दास वृद्ध हो चुके थे उनको उनके पद से हटाया नहीं बल्की उनके स्थान पर उनके पुत्र प्रतिनिधि के रूप में सेवाएं दे सकते थे। ऐसा करके उसने अपनी उदारता का परिचय दिया। यद्यपि बाद में उसकी उदारता की नीति तुगलक वंष के पतन का कारण बनी। फिरोजशाह के द्वारा राज्य और प्रषासन के सभी महत्वपूर्ण पदों पर दासों की नियुक्ति से स्पष्ट होता है कि उसने पूर्ववर्ती सुल्तानों की अपेक्षा दास प्रथा को सर्वाधिक प्रश्रय दिया। इसका कारण संभवतः यही था कि वह दासों के महत्व को जानता था और उसे अपने पूर्ववर्ती सुल्तानों के काल में दासों की सक्रिय गतिविधियों का ज्ञान था। वह सुल्तान मोहम्मद गौरी में इल्तुतमिश के दासों के बारे में जानता था। उसे पता था कि नासिरूद्दीन महमूद की सफलता का कारण ग्यासुद्दीन बलबन ही था। जो प्रारम्भ में दास था।

अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण विजयो के पीछे भी उसके दास मलिक का ही हाथ था।[14] इस प्रकार जब पूर्ववर्ती शासको के काल में दास इतने लाभप्रद थे तो फिरोज तुगलक किस प्रकार अपने आप को इन सेवाओं से वंचित रख सकता था? इन घटनाओं ने उनके मन में यह भावना भर दी कि उसके अमीरों में एक ऐसा वर्ग भी है जो उसके शासन का विरोधी है। यदि वह उनसे सतर्क नहीं रहा तो वे कभी भी उसके साथ विश्वास–घात कर सकते हैं। अतः उनसे निपटने के लिए उसे अपने समर्थकों के एक सुदृढ़ संगठन की आवश्यकता थी जो उसके अधीनता में रहकर वफादारी से कार्य करें। दासों का यह संगठन उसकी इसी रचनात्मक प्रवृति का परिणाम था।

संभवतः फिरोजशाह तुगलक अपने हिंदू विरोधियों तथा सजातीय विपक्षियों का सामना करने के लिए एक ऐसा राजनीतिक वर्ग स्थापित करना चाहता था जो अत्यधिक शक्तिशाली हो, जिसका अस्तित्व उसी पर निर्भर हो और जो बिना किसी रोक–टोक के उसके इशारों पर चल सके। इस

उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने योग्य दासों को बड़े–बड़े पदों पर नियुक्त किया। मोहम्मद तुगलक के शासनकाल की बजाय फिरोज तुगलक के काल में बहुत कम विद्रोह हुए। इसका कारण संभवतः यही था कि फिरोजशाह ने प्रत्येक विभाग में दासों को नियुक्त कर रखा था और वह इतनी निष्ठा के साथ कार्य करते थे कि कोई भी व्यक्ति विद्रोह करने का साहस नहीं कर पाता था। इस संदर्भ में डॉ० आई० एच० कुरैशी लिखते हैं कि फिरोजशाह द्वारा दासों की एक बड़ी संख्या में प्राप्ति उसकी सफलता का माप है, जिसे मोहम्मद तुगलक की कठोरता के कारण उसके बाद राज्य के कोने–कोने में फैले हुए उपद्रवों को शांत करने में सफलता प्राप्त की।[15]

निष्कर्ष

दास फिरोजशाह के लिए लाभदायक थे परंतु इसकी कुछ हानियाँ भी थी। फिरोजशाह के प्रारंभिक काल में तो दास प्रथा सफल रही परंतु उसके शासनकाल के अंत में यह विनाशकारी सिद्ध हुई। इसके कारण राजकीय कोष खाली हो गया। इक्तादार राजकीय कर नकदी के रूप में न देकर दासों के रूप में अदा करते थे। दासों की खरीदारी, पालन–पोषण, उनके प्रशिक्षण पर भारी धनराशि खर्च होती थी। जो दास बड़े–बड़े पदों पर नियुक्त थे उनकी स्थिति सुल्तान में बड़े–बड़े अमीरों जैसी थी। इस संदर्भ में आगा मैहदी हुसैन लिखते हैं कि सुल्तान का प्रत्येक दूसरा दास बादशाह था। प्रत्येक हाथी तथा सेना रखता था तथा छत्र धारण करता था।[16] दास मलिक कितने धनवान थे इसका अनुमान मलिक एमादुलमुल्क की संपत्ति से लगाया जा सकता है। अफीफ ने उसके धन की संख्या 13 करोड़ टके बतायी है।[17] फिरोजशाह अपने राजनीतिक और प्रशासनिक मामलों में अपने दासों से परामर्श करता था तथा उन्हीं के अनुसार कार्य करता था। अपने वजीर और दास खानजहाँ मकबूल पर तो सुल्तान का इतना अधिक विश्वास था कि स्वयं सुल्तान यह कहता था कि दिल्ली का वास्तविक सुल्तान खानेजहाँ मकबूल है। फिरोजशाह ने दासों को इतना शक्तिशाली बना दिया कि उनमें प्रशासन करने की भावनाएं जागृत हो उठी। धीरे–धीरे उन्होंने राजनीति में भी हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। फिरोज शाह की मृत्यु के पश्चात तो वे राज्य के कर्ता–धर्ता तथा सुल्तान निर्माता बन गए और अंत में तुगलक वंश के पतन का अहम कारण सिद्ध हुए।

संदर्भ

1. आ०सी०जौहरी, फिरोजतुगलक (1351–1388 ई०),ए०बी०एस० पब्लि० जालन्धर, 1990, पृ0सं0–2–3
2. अफीफ, तारीख–ए–फिरोजशाही, पृ0सं0–394
3. उपरोक्त, पृ0सं0–266–69
4. मुहम्मद बिहामद, तारीख–ए–मुहम्मदी, अंग्रेजी अनु०, मुहम्मद जाको, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, 1972, पृ0सं0–416
5. अफीफ, तारीख–ए–फिरोजशाही, पृ0सं0–271–72
6. उपरोक्त, पृ0सं0–277, 280
7. उपरोक्त, पृ0सं0–288

8. उपरोक्त, पृ0सं0–387
9. बरनी, तारीख–ए–फिरोजशाही, पृ0सं0–579–582
10. अफीफ, तारीख–ए–फिरोजशाही, पृ0सं0–582
11. उपरोक्त, पृ0सं0–271
12. उपरोक्त, पृ0सं0–528
13. उपरोक्त, पृ0सं0–285
14. तुगलक डायनस्टी, पूर्वोक्त, पृ0सं0–434
15. आई०एच० कुरैशी, द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द सल्तनत, पृ0सं0–66–67
16. तुगलक डायनस्टी, पूर्वोक्त, पृ0सं0–430
17. अफीफ, तारीख–ए–फिरोजशाही, पृ0सं0–439